राज्य शिक्षा केन्द्र, मध्यप्रदेश

बी–विंग, पुस्तक भवन, अरेरा हिल्स, भोपाल, म.प्र. – 462011
फोन: 0755– 2760561, 2768392, 2768395, 2552365
www.educationportal.mp.gov.in

उड़ान

बालिका शिक्षा की प्रेरक कथाएं

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

राज्य शिक्षा केन्द्र, मध्यप्रदेश

स्कूल चलें अभियान
मध्य प्रदेश

प्रेरणा

श्री पारस चन्द्र जैन
मंत्री स्कूल शिक्षा विभाग

श्री दीपक जोशी
राज्यमंत्री – स्कूल शिक्षा विभाग

मार्गदर्शन

श्री सुधीरंजन मोहन्ती
अपर मुख्य सचिव, म.प्र. शासन, स्कूल शिक्षा विभाग,

श्रीमती रश्मि अरुण शमी
आयुक्त, राज्य शिक्षा केन्द्र,

डॉ. अरुणा गुप्ता
अपर मिशन संचालक, राज्य शिक्षा केन्द्र

श्रीमती स्वाति मीणा
अपर मिशन संचालक, राज्य शिक्षा केन्द्र

संयोजन

तनूजा श्रीवास्तव,
उप प्रबंधक, राज्य शिक्षा केन्द्र

सहयोग

सुमन सिंह डंगस
बालिका शिक्षा सलाहकार, राज्य शिक्षा केन्द्र

संपादन

अमिताभ अनुरागी
मीडिया सलाहकार, राज्य शिक्षा केन्द्र

टंकण

कोंपल सक्सैना, पंकज बारंगे
राज्य शिक्षा केन्द्र

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

स्कूल चलें अभियान
मध्य प्रदेश

अपनी बात

भौगोलिक, सामाजिक एवं रीति रिवाजों की दृष्टि से मध्यप्रदेश, विविधताओं का प्रदेश है। प्रदेश के लगभग हर क्षेत्र में बालक और बालिकाओं के मध्य समानता के दृष्टिकोंण का अभाव भी परिलक्षित होता रहा है। बालिका शिक्षा के क्षेत्र में भी सामाजिक एवं पारिवारिक कारणों से जागरुकता का अभाव रहा है। बालिकाओं की शिक्षा के प्रति सामाजिक कारणों से अनेक बालिकाएं अपनी प्रारंभिक शिक्षा ही पूर्ण नही कर पातीं हैं, या शाला त्यागी हो जाती हैं। बीते कुछ समय में इस स्थिति में तेजी से सुधार हुए हैं, फिर भी अनेक बालिकाएं ऐसी हैं जिनकी पढ़ाई बीच में ही छूट गई या वे घर से स्कूल की दूरी या अन्य कारणों से स्कूल में नियमित नही होने से स्कूल से दूर हो गई।

ऐसी ही परिस्थितियों को संबोधित करते हुए मध्यप्रदेश में कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय और बालिका छात्रावासों की स्थापना से बालिकाओं को आवासीय सुविधाओं के साथ अपनी प्रारंभिक शिक्षा निर्बाध रुप से पूर्ण करने के अवसर प्रदान किये गए हैं।

इन छात्रावासों में रह–पढ़ कर अपने जीवन की नींव मजबूत कर रहीं बालिकाओं और उनके छात्रावासों के प्रेरक प्रसंगों को इस पुस्तिका में समाहित कर आपके सम्मुख प्रस्तुत किया है। आशा है, आप सुधी पाठकों का समर्थन प्रदेश की बालिकाओं को अवश्य प्राप्त होगा।

रश्मि अरुण शमी
आयुक्त राज्य शिक्षा केन्द्र

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

स्कूल चलें अभियान
मध्य प्रदेश

कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय

कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय भारत शासन की योजना है जिसके अनुसार शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े ऐसे विकासखंड (जहां महिला साक्षरता दर ग्रामीण महिला साक्षरता दर के राष्ट्रीय औसत से कम तथा महिला व पुरुष साक्षरता दर में राष्ट्रीय औसत से अधिक हो) में अनुसूचित जाति अथवा अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं के लिए कोई आश्रम शाला नहीं है, वहां कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय का आरंभ किये गए हैं।

बालिकाओं की प्रारंभिक स्तर तक की शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय योजना की स्वीकृति भारत शासन द्वारा प्रदान की गई है। योजना का उद्देश्य 75 प्रतिशत बालिकाएं अनुसूचित जाति, जनजाति, पिछड़ा वर्ग, अल्प संख्यक समुदाय की व 25 प्रतिशत अल्पसंख्यक एवं गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाली, अनाथ, बेसहारा एवं एकल परिवार की बालिकाओं को 8वीं तक की शिक्षा पूर्ण करने के लिए आवश्यक व्यवस्थायें उपलब्ध कराना है। वर्तमान में संचालित 207 के.जी.बी.वी. में लगभग 28800 बालिकाएं लाभान्वित हो रही हैं।

वर्ष 2014–15 में म.प्र. राज्य पर्यटन विकास निगम मर्यादित द्वारा खोज यात्रा के अन्तर्गत विभिन्न दर्शनीय, ऐतिहासिक, स्थलों का भ्रमण करवाया गया। म.प्र. राज्य पर्यटन विकास निगम मर्यादित द्वारा जीवन कौशल के अन्तर्गत सहायक वार्डन को हाउस कीपिंग प्रशिक्षण प्रदान किया गया है। इसके साथ ही साथ सहायक वार्डन एवं मुख्य रसोईयों को राष्ट्रीय होटल प्रबंधन, खान–पान एवं पोषण आहार संस्थान भोपाल के माध्यम से हाउस कीपिंग एवं खान–पान का प्रशिक्षण दिया गया है।

बालिका छात्रावास

हमारे प्रदेश में बालिकाओं का प्रारंभिक स्तर की पढ़ाई पूर्ण न कर पाने का कारण, घर के नजदीक माध्यमिक शाला सुविधा न होना अथवा अन्य सामाजिक व आर्थिक कारण है। अतः प्रारंभिक शिक्षा सुविधा से वंचित रहने वाली बालिकाओं के लिए उनकी प्रारंभिक शिक्षा पूर्ण करने तक उन्हें आवासीय सुविधा उपलब्ध कराने के लिए बालिका छात्रावास योजना आरंभ की गई है।

मध्यप्रदेश में वर्तमान में 324 बालिका छात्रावास स्वीकृत हैं। इन छात्रावासों के संचालन के लिए सामान्यतः ऐसे विकासखंड चयनित किये गये हैं जहां जिले में जेंडर गेप (महिला व पुरुष साक्षरता दर में अंतर) सर्वाधिक है। साथ ही यह भी ध्यान रखा गया है कि जिन विकासखंडों में शाला अप्रवेशी व शाला त्यागी बालिकाएं अधिक हैं वहां बालिका छात्रावास खोले गए हैं।

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

हमारी उड़ान

छात्रावासों में रह–पढ़ रही बालिकाओं की सफलता की कहानियाँ

लाड़ली लक्ष्मी

यूं तो भारतीय संस्कृति में नारी को पूज्यनीय और बालिका को लक्ष्मी स्वरुपा माना जाता है, पर हर माँ या बेटी को ये सम्मान नही मिलता। ऐसा ही कुछ हुआ था कटनी ज़िले के ग्राम रीठी में संचालित कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय में सबकी लाड़ली, लक्ष्मी और उसकी माता जी के साथ। लक्ष्मी जब 8 वर्ष की थी तभी उसके पिता ने माँ को ओर लक्ष्मी को छोड़ दूसरी शादी कर ली। लक्ष्मी, माँ के साथ अपने मामा के यहां भदनपुर गांव में आकर रहने लगी। अब ना लक्ष्मी के पास स्कूल था ना ही सहेलियां। ऐसे में एक दिन शाला के सर्वे के दौरान लक्ष्मी को चिन्हित कर कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय में संचालित समर कैंप में लाया गया।

प्रारंभ में उसका मन छात्रावास में नहीं लगता था कहती थी माँ बकरियां चराती है, मामा बहुत अच्छे हैं पर उनका भी तो परिवार है। मेरी नानी भी नहीं है, नाना जी मेरी मम्मी को बहुत चाहते हैं, पर माँ को घर का सारा काम करना पड़ता है, मुझे माँ की बहुत याद आती है। लक्ष्मी छात्रावास में आयी तो रोती बहुत थी धीरे–धीरे वार्डन अन्य स्टाफ तथा बालिकाओं के साथ खेल खेलना उसको बहुत अच्छा लगने लगा। उसे नृत्य करना बहुत पसंद है।

अभी लक्ष्मी कक्षा 6ठीं में अध्ययनरत है। छात्रावास में आने के बाद सभी स्टाफ ने मिलकर उससे मित्रता की और उसको भावनात्मक रूप से अपने साथ जोड़ा। धीरे–धीरे लक्ष्मी ने सभी के साथ मित्रता की और एक दिन की बात है वह वार्डन से कह रही थी कि पापा की जगह हर कागज में माँ का नाम लिखवा दो। शाला के जाति प्रमाणपत्रों में एवं अन्य सभी कागजों में उसने माँ का ही नाम लिखाया हैं। वह पिता के बारे में किसी भी प्रकार की बात सुनना पसंद नहीं करती।

लक्ष्मी पढ़ने लिखने में अब बहुत रुचि लेने लगी है तथा शाला एवं छात्रावास में सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेने लगी है। 15 अगस्त के शालेय कार्यक्रमों में भाग लेकर लक्ष्मी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

आज लक्ष्मी की माँ अपनी बेटी को छात्रावास में रखकर उसका जीवन सफल बनाने की आकांक्षी हैं, और लक्ष्मी भी अपनी माँ की आशाओं को फलीभूत करना चाहती है। लक्ष्मी पढ़कर पुलिस अधिकारी बनना चाहती है। इसके लिए वह अभी से बहुत मेहनत कर रही है।

इनचुरी बनेगी शिक्षिका

कुमारी इनचुरी, पारधी बहेलिया समाज की बालिका है। जंगलों पर निर्भर रहने वाले इस समाज में शिकार और अपराध की पहचान कोई अधिक पुरानी नही है। शिक्षा के प्रति भी इस समाज में जागरुकता का अभाव ही था। इनचुरी के पिता श्री लोकन बहेलिया और माता श्रीमती सुनचुरी भी निरक्षर हैं। इनका अस्थाई निवास, ग्राम मोहरवा जिला सतना म.प्र. है। इनचुरी का जन्म ग्रम मोहरवा में ही 3 दिसम्बर 2001 में हुआ था। इन्चुरी के अलावा उसके छोटे चार भाई भी है। जिनमें से तीन भाई बालक पारधी छात्रावास नारंगी बाग में शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं एवं सबसे छोटा भाई मा–बाप के साथ गृह ग्रम में रह रहा हैं। इनचुरी भी कभी शाला नहीं गई थी।

कुमारी इनचुरी के माता–पिता अपने पैतृक व्यवसाय जड़ी बूटियों को बेचना, माला बेचना जंगली जानवरों का शिकार करना, इसी के सहारे अपना भरण –पोषण करते थे। इन्चुरी कहती है कि उसके परिवार में कोई पढ़ा लिखा नहीं था न ही रिश्तेदारों में किसी ने शिक्षा ग्रहण की। इन्चुरी बहेलिया भाषा में बात किया करती थी।

इन्चुरी ने बताया कि मेरे माता–पिता ने मुझे बताया कि वर्ष 2007 में जिला पन्ना के अजयगढ़ विकासखंड के पाठाबताशा स्थान में ढेरा डालकर माला, चूड़ी, जड़ी–बूटी बेचने एवं शिकार कर अपना गुजर बसर करना प्रारंभ किया ही था कि अचानक एक दिन वन विभाग के कर्मचारी–अधिकारी पुलिस के साथ ढेरे में आ धमके। इन्हें देखकर हम सभी बहेलिया डेरा छोड़कर भागने लगे तब वन विभाग के कर्मचारी–अधिकारी ने हमें समझाईश दी कि तुम लोग अवैध शिकार करते हो जिससे तुम्हें जेल की हवा खानी पड़ेगी। इससे बेहतर है कि आप लोग समाज की मुख्यधारा से जुड़ें और अपने बच्चों को शिक्षित करें। इस तरह आरबीसी की नौ माह की योजना बनाकर इन्चुरी सहित पन्ना जिले में घूम रहे सभी बहेलिया बच्चों को जंगल विभाग की ओर से काष्ठागार के पास हॉस्टल में रखकर ब्रिजकोर्स प्रारंभ किया गया।

पहले जब इन्चुरी को काष्ठागार हॉस्टल में रखा गया तब वह बहुत रोती थी, वह कहती थी कि मम्मी–पापा की याद बहुत आती है लेकिन जबरन हमको रहना पड़ता था तथा भाषा भी कम समझ में आती थी। धीरे–धीरे भाषा एवं पढ़ाई समझ में आने लगी तब इन्चुरी को कुछ अच्छा लगने लगा।

यहाँ से इनचुरी अपनी प्रारंभिक शिक्षा पूर्ण करने के लिए रीठी के इस कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय में आ गई। छात्रावास में उसे खाना, कपड़ा, पठन–पाठन, व्यक्तिगत आवश्यकता, चिकित्सा एवं अन्य सभी सुविधाओं के साथ शिक्षा प्रदान करने की भी उत्तम व्यवस्था है।

कुमारी इन्चुरी पढ़ने में अव्वल है। खेलकूद में बॉस्केटबॉल, बेडमिंटन, पैंटिंग, कबड्डी इत्यादि खेलों में रुचि रखती है। अनेक गुणों से परिपूर्ण इनचुरी शिक्षक बनने की रुचि रखती है।

खेलों से खुली ममता

ग्वालियर ज़िले के हस्तिनापुर कस्बे में संचालित, कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय की वार्डन बताती हैं कि, ''दिनांक 10.6.2014 को अचानक मेरे मोबाइल पर ग्वालियर ज़िले की सहायक परियोजना समन्वयक, बालिका शिक्षा का फोन आया। उन्होंने बताया कि मैं तुम्हारे छात्रावास में तीन बालिकाओं को भेज रही हूँ तुम उनका अच्छी तरह ध्यान रखना। ये बालिकाएं ग्वालियर स्टेशन पर कचरा बटोरते हुए मिलीं हैं। थेड़ी ही देर में सर्व शिक्षा अभियान के विकासखंड़ स्त्रोत केन्द्र समन्वयक अपनी गाड़ी से हमारे छात्रावास में थे। उनके साथ ही ये बालिकाएं भी थीं। मैने उन बालिकाओं का सहृदय स्वागत किया। उनमें एक बालिका कुमारी ममता पुत्री श्री किशोरी लाल निवासी ग्रम बूदोल पलेरा जिला टीकमगढ़ है। ममता को कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय हस्तिनापुर मुरार ग्वालियर में वर्ष 2014–15 में दिनांक 10.6.14 को लाया गया था। ममता को जब छात्रावास में लाया गया था, तब वह रेल्वे स्टेशन पर पन्नी बीनती थी। ममता छात्रावास में आने से पहले कभी विद्यालय नहीं गयी थी। उसे हिन्दी वर्णमाला के अक्षर तक का ज्ञान नहीं था। जब वह आयी थी तब अत्यधिक सहमी हुई थी। वह अन्य बालिकाओं से बात तक नहीं करती थी, बस रह–रहकर रोती रहती थी।

कुछ समय बीतने पर ममता की स्थिति में उसकी वेशभूषा आदि में तो परिवर्तन हुआ पर उसकी मानसिक स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं हो पा रहा था। उसके कुछ दिनों बाद हमें राज्य कार्यालय से स्पोर्टस फॉर डब्लपमेंट का प्रशिक्षण दिया गया तब हमने उसी के अनुसार ममता को सुधारने का प्रयास किया। हमने ममता को खेल में शामिल करना शुरु किया पहले तो वह रो–रोकर भाग जाती थी। लेकिन फिर धीरे–धीरे उसे खेलों में आनंद आने लगा। खेल खेलने के बाद से उसका व्यवहार बदलने लगा। वह सबसे बातचीत करने लगी, धीरे–धीरे वह सब बालिकाओं से घुल मिलकर रहने लगी। अब वह खुश भी रहने लगी। जिससे उसका पढ़ाई में मन भी लगने लगा तथा शैक्षणिक स्तर भी सुधर गया तथा जब ममता आयी थी तब वह सुस्त एवं सहमी रहती थी। जिससे उसका स्वास्थ ठीक नहीं रहता था, परन्तु खेल खिलाने से उसके स्वास्थ्य में भी सुधार हो गया एवं अब वह हर कार्य को करने के लिए तत्पर रहती है तथा समस्त क्रियाकलाप सभी बालिकाओं के साथ नियमित रूप से कार्य करती है। अब छात्रावास में होने वाले खेलों में वह सांस्कृतिक कार्यों में भाग लेती है व व्यवसायिका सिलाई, कढ़ाई, बुनाई तथा खिलौने बनाना जैसे कार्यों में आये दिन रुचि दिखाने लगी है। किचिन गार्डन व छात्रावास के लगे पेड़–पौधों का विशेष ध्यान रखती है। वह अपने आपको भाग्यशाली समझती है, कि मुझे जिन्दगी में पढ़ने का मौका मिला। अगर मुझे इस छात्रावास में नहीं लाया जाता तो मैं बिल्कुल नहीं पढ़ लिख सकती थी। अब मैं पढ़–लिखकर अपना भविष्य बना सकती हूँ। वर्तमान में ममता बहुत ही होशियार एवं समझदार हो गयी है वह अब अपनी कक्षा की मॉनिटर चुनी गयी है। अब वह खेल मे भी निपुर्ण हो गयी है। कई खेल वह स्वयं बालिकाओं को खिलवाती है। इसके साथ ही वह छात्रावास के अन्य कार्यक्रम में भी भाग लेती है। सभी अध्यापक भी ममता की प्रशंसा करते हें वह सभी बालिकाओं एवं पूरे स्टाफ की प्रिय छात्रा बन गयी है वह कहती है कि पढ़ लिख कर पुलिस इंस्पेक्टर बनूंगी।''

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

स्कूल चलें अभियान
मध्य प्रदेश

हौंसलों की उड़ान

भील जनजाति की कुमारी मन्ता का जन्म दमोह ज़िले के रजपुरा कस्बे से करीब 7 कि.मी. दूर एक छोटे से गाँव रावतपुरा में दिनांक 05 जुलाई 2002 को हुआ था। रावतपुरा से 3 कि. मी. सूरजपुरा प्राथमिक शाला में ही उसने कक्षा पहली से प्रवेश लिया है। परन्तु उसके पिता का स्वर्गवास हो जाने के कारण मन्ता कक्षा 3री तक ही पढ़ पाई उसकी माँ ने उसकी पढ़ाई बन्द करा दी और घर के कामों में लगा दिया। क्योंकि उसकी माँ के ऊपर 7 बच्चों की जबाबदारी थी। परन्तु जब रजपुरा ग्राम के कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय में समरकैंप का संचालन हुआ तो मोटीवेशन के संपर्क के दौरान शाला त्यागी के रूप में मन्ता को भी छात्रावास में लाया गया। पहले तो उसकी माता एवं भाई बहन, मन्ता को छात्रावास में भेजने हेतु तैयार नहीं थे, परन्तु बाद में बहुत समझाने पर वह उसे समर कैंप में भेजने को तैयार हो गये। वहीं से मन्ता के विकास का रास्ता खुला।

मन्ता डोंगरपुरा (रावतपुरा) के आदिवासी परिवार से है। यह क्षेत्र इतना पिछड़ा हुआ है, कि जहां पिछड़ी जातियों की महिलाओं एवं बालिकाओं पर किसी प्रकार का ध्यान नहीं दिया जाता न ही उनके खान–पान, रहन–सहन एवं शिक्षा पर ध्यान दिया जाता है। मन्ता के परिवार ने भी इसी परंपरा को बनाए रखा था। परिवार में मन्ता सहित 4 भाई एवं 3 बहनें हैं। आदिवासी बहुल क्षेत्र होने के कारण यहां किसी तरह का कोई व्यवसाय भी नहीं है। यहां लोग जंगलों में होने वाले चरवा महुआ के पेड़ों के फूल बेचकर ही अपना जीवन यापन करते हैं।

मन्ता के परिवार की स्थिति भी आर्थिक रुप से ठीक नहीं थी। उनका रहन–सहन, पहनावा साफ–सफाई के बारे में वह जानते भी नहीं थे, उनकी बोली भी समझ नहीं आती थी। उनका घर झोंपड़ी की तरह था, जिस पर ऊपर से पत्थर बिछे हुए थे चारों तरफ गंदगी थी। जब कस्तूरबा गाँधी विद्यालय के सहयोगी उनके घर गये तो न तो उन्हें इस बात का पता ना था कि वे कौन हैं, और न ही इस व्यवहारिकता का ज्ञान था कि, बाहर से आये किसी इंसान से किस तरह व्यवहार करना चाहिए यह भी उन्हें मालूम नहीं था।

मन्ता की माता की भाषा समझ न आने के कारण उनसे बातचीत करने में बहुत ही कठिनाई का सामना करना पड़ा यहां के लोगों ने पढ़ाई के प्रति किसी प्रकार की रुचि न होने से उन्हें अपनी बात समझाने में बहुत परेशानी हुई।

मन्ता को जब हम उसके गांव से लाये, तो हमें उसकी बोली समझ में नहीं आती थी, वह गौड़ी में बात करती थी उसके मुँह से स को च निकलता था तो हमें भी उसकी बात समझने में समय लगता था। बाद में जब हमने उसे अक्षर ज्ञान चार्ट तथा अक्षर कार्ड द्वारा समझाया गिनती को हमने लकड़ी कार्ड, कंकड़ों पत्थरों द्वारा सिखाया फिर उसे अक्षरों को जोड़कर पढ़ना सिखाया। अंकों का ज्ञान लंगड़ी खेल के माध्यम से कराया एवं साफ–सफाई से रहना , रहन–सहन में भी सुधार करवाया और अन्य प्रकार के खेल जैसे फटवार, कैरम, खो–खो, डॉज बॉल, बालरिले, टीपू आदि खेल खिलाये जिससे उसके मानसिक शारीरिक व बौद्धिक विकास में भी प्रगति हुई और इस तरह शिक्षा खेल व अन्य गतिविधियों द्वारा उसका विकास हो रहा है।

मन्ता की वर्तमान स्थिति में उसकी भाषा में सुधार हुआ है, उसका रहन–सहन, वेश भूषा, उठने–बैठने का तरीका खाने–पीने के तरीके में सुधार आया है, उसको छात्रावास में भी बहुत अच्छा लगता है। आज वह सबकी प्यारी दोस्त बन चुकी है।

"आज की शैक्षणिक स्थिति में वह अक्षर मात्रायें जोड़कर किताब पढ़ने लगी है। उसे 20 तक पहाड़े, जोड़, घटाना, गुणा, अंग्रेजी में रंगों, फलों, दिनों के नाम स्पेलिंग सहित आने लगे है। कक्षा 6वीं में अध्ययनरत रहते हुए वह आज ग्रेड डी से ग्रेड ए में आ गई है वह पढ़ने तथा अन्य गतिविधियों में आगे बढ़कर रुचि लेती है। जीवन में कुछ कर गुजरने की इच्छा मन में रखे, मन्ता अपने जीवन का मूलमंत्र आगे दी गई उन पंक्तियों को मानती है, जिन्हें वो सदैव गुनगुनाती रहती है।

असफलता एक चुनौती है स्वीकार करो,
क्या कमी रह गई देखो और सुधार करो,
जब तक न सफल न हो, नींद चैन को त्यागो तुम,
संघर्षों का मैदान छोड़ मत भागो तुम,
कुछ किये बिना ही जय जयकार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

स्कूल चलें अभियान
मध्य प्रदेश

अध्ययन् को माँ की पूजा समझती है
पूजा सिंघाड

पूजा सिंघाड़, अपनी तीन बहनों एवं माँ के साथ नानी के घर रहती है। चार में से दुर्भाग्य से पूजा की छोटी बहन को खून में खराबी के कारण कभी भी मूर्छित हो जाने वाली बीमारी का सामना करना पड़ रहा है। हर महीने पूजा की बहन का खून बदला जाता है। माँ हर महीने छोटी बहन के इलाज के लिए रुपये जुटाने में लगी रहती है। चार बेटियों के पालन–पोषण की जवाबदारी पूजा की माँ पर ही थी, क्योंकि शराबी पति का साथ न देना और नाही जिम्मेदारी को समझना व अन्य हरकतों से तंग आकर पूजा की माँ पति से अलग रहने लगी। उसके सामने समस्या थी कि, वो अकेली अपने बच्चियों को पालने के लिए मजदूरी करें या बीमार बेटी की देखरेख या फिर नाला भर जाने व रास्ते में आने वाली अड़चनों से बचाकर बच्चों को स्कूल छोड़कर आए या घर की देख–रेख करे। इन सब कारणों से पूजा के विद्यालय की पढ़ाई में भी अनियमितता आ गई थी।

कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय, राजेन्द्र नगर, इंदौर के मोटीवेशन केम्प के दौरान पूजा की माँ को छात्रावास संबंधी सुविधाओं की जानकारी दी गई। फिर समर कैम्प में इसी कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय में पूजा को प्रवेश दिलाया गया। पूजा पढ़ाई में कमजोर थी मगर समर कैम्प में उसके साथ मेहनत कर उसे कक्षा 6ठीं की दक्षताओं में दक्ष कर छटवीं में प्रवेश दिलाया गया और पूजा के जीवन में छात्रावास का सफर यहीं से शुरु हुआ। छात्रावास में रहते–रहते आज पूजा में अनुशासन के प्रति लगन है। वह समस्त कार्यों में सहयोग देना जानती है माँ के दुखों को कम नहीं कर सकती पर बढ़ाएगी भी नहीं ऐसा कहना है पूजा का। वह जब भी घर जाती है अपनी छोटी बहनों की जिम्मेदारी बड़े प्यार से निभाती है, साथ ही बीमार बहन की देखभाल भी करती है। माँ के कामों में मदद करती है।

छात्रावास में रहकर वह आत्मविश्वास से भरपूर हो गई। वह सब के साथ मिलकर व मैत्रीपूर्ण व्यवहार करती है पढ़ाई में भी धीरे–धीरे उपलब्धि प्राप्त कर रही है। वह मेहनती है व स्वयं के प्रति ईमानदार जो कि उसे एक श्रेष्ट स्थान तक पहुँचाने में सहायक है।

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

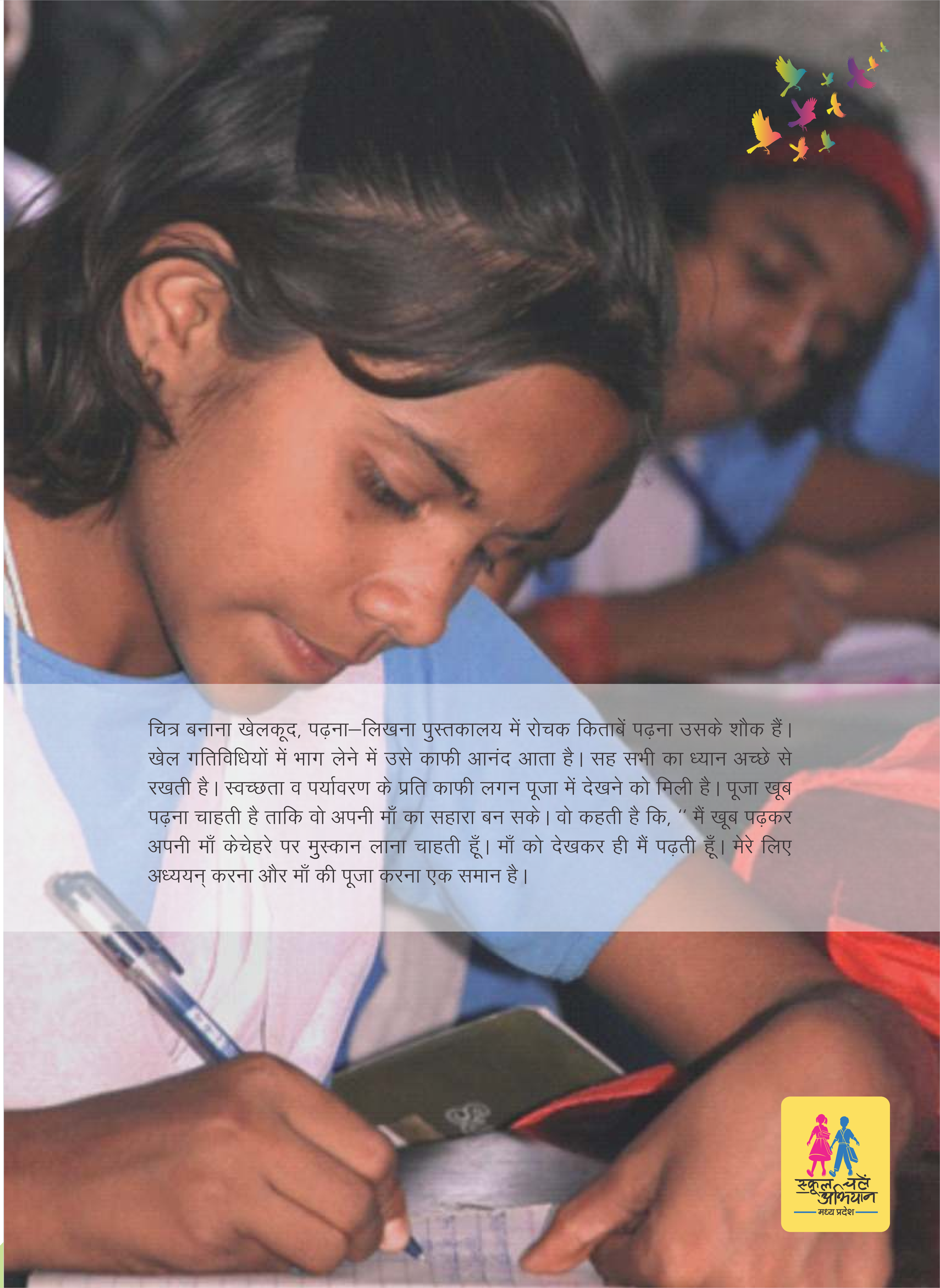

चित्र बनाना खेलकूद, पढ़ना–लिखना पुस्तकालय में रोचक किताबें पढ़ना उसके शौक हैं। खेल गतिविधियों में भाग लेने में उसे काफी आनंद आता है। सह सभी का ध्यान अच्छे से रखती है। स्वच्छता व पर्यावरण के प्रति काफी लगन पूजा में देखने को मिली है। पूजा खूब पढ़ना चाहती है ताकि वो अपनी माँ का सहारा बन सके। वो कहती है कि, " मैं खूब पढ़कर अपनी माँ केचेहरे पर मुस्कान लाना चाहती हूँ। माँ को देखकर ही मैं पढ़ती हूँ। मेरे लिए अध्ययन् करना और माँ की पूजा करना एक समान है।

स्कूल चलें अभियान
मध्य प्रदेश

भगवान ने सुने अंजना के रुदन स्वर

अंजना

वंदना

शिक्षिका संतोष शर्मा बताती हैं कि, वे एक दिन बाज़ार में कुछ खरीदारी कर रही थी। तभी बाल रुदन के स्वर कानों में पड़े। देखा तो एक छोटी सी बालिका नौ वर्ष की आयु में एक फल के ठेले पर अपने पिता के साथ फल बेच रही थी। थोड़ी–थोड़ी देर में रोती जा रही थी। उसके पापा उसे बार–बार डांट रहे थे। वह डांट से सहमकर कुछ देर रोना बंद कर देती थी। जब मैंने उसे रोते देखा तो मुझसे रहा नहीं गया। मैंने पूछ ही लिया–''भैया यह बालिका क्यों रो रही है? और यह बालिका किसकी है'?

तब फल बेच रहे श्री बाबूलाल विश्वकर्मा जी ने बड़े दुखी मन से बताया कि ''क्या करूँ मैडम जी उसकी माँ नहीं है'' और मैं ठेला लगाकर इसका पेट भर रहा हूँ। इसका नाम अंजना है। घर पर मेरी एक बेटी और है वन्दना। वह घर का काम करती है, इसलिए मैं इसे अपने साथ ठेले पर बिठा लेता हूँ। मैंने कहा आप इन्हें पढ़ने क्यों नहीं भेजते? उन्होंने कहा मैडम जी इस फल के ठेले से मैं सिर्फ इतना ही कमा पाता हूँ कि इनका पेट भर सकूं, पढ़ाई का खर्च उठाने लायक नहीं कमा पाता हूँ। तब मैंने कहा कि आप इसे छात्रावास में पढ़ाई के लिए छोड़ दीजिए, वहाँ आपका कोई ख़र्चा पढ़ाई पर नहीं आयेगा। इतना कहकर मैं वापिस आ गई व मैंने बालिका छात्रावास बैरागढ़ कला की वार्डन श्रीमती अर्चना तिवारी से इन बच्चियों के बारे में बात कीं। उन्होंने बच्चियों को छात्रावास में रखने की मंजूरी दे दी।

उसके बाद वार्डन और मैं, हम दोनों बाबूलाल जी के ठेले पर पुनः पहुँचे उनसे उनकी दोनो बालिकाओं को बालिका छात्रावास में प्रवेश कराने को कहा। उन्हें समझाया कि यह बालिकाएँ भी अन्य बालिकाओं की तरह छात्रावास में रहकर पढ़ेंगी और हम उनका पूरा ध्यान रखेंगे। इसके बाद बाबूलाल जी हमारे साथ बालिका छात्रावास आये, यहाँ की व्यवस्थाओं से संतुष्ट होकर उन्होंने अपनी बच्चियों वंदना औश्र अंजना का प्रवेश इस बालिका छात्रावास के लिंक स्कूल में करवाया और अब दोनों बालिकाएं छात्रावास में रहकर पढ़ रही हैं। वर्तमान में अंजना कक्षा चौथी व वन्दना कक्षा सातवीं में अध्ययनरत् हैं। दोनों बालिकाएं बहुत अच्छा पढ़ना–लिखना सीख गई हैं। जब उनके पिता बाबूलाल जी, कभी छात्रावास में आते हैं तो अपनी बच्चियों को देखकर उस दिन को धन्यवाद देना नही भूलते, जिस दिन बाज़ार में अंजना उनके ठेले पर बैठकर रो रही थी। वो कहते है कि, बहन जी उस दिन मेरी बच्ची का रोना आपने नही शायद भगवान ने सुना था, जो इन्हें जीवन की एक प्रगतिशील राह मिल गई है।

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

वो प्रीती नासमझ थी

पहले

अब

मध्यप्रदेश के मुरैना ज़िले के ग्राम जौरा की बालिका कुमारी प्रीती आदिवासी पुत्री श्री सुरेश आदिवासी कभी स्कूल नही गई थी। ग्रम जौरा में संचालित बालिका छात्रावास के मोटिवेशन कैम्प के दौरान वर्ष 2012 में प्रीती पहली बार स्कूल के माहौल में बालिका छात्रावास जौरा में आयी थी। प्रीती की माँ श्रीमती भारती आदिवासी भी पढ़ी लिखी नहीं है। उसके घर की आर्थिक स्थिति बहुत खराब है।

प्रीती जब छात्रावास में आयी थी तब उसे अक्षर ज्ञान भी नही था। लिहाजा वो यहाँ के माहौल में गुमसुम रहती, शाम होते ही घर जाने के लिए कहती और बहाने बनाती थी कि मेरी तबियत खराब हो रही है, मुझे घर जाना है। वह छात्रावास की किसी भी गतिविधि में भी हिस्सा नही लेती। धीरे धीरे दूसरी बालिकाओं और बालिका छात्रावास के सहयोगियों के अपनत्व भरे व्यवहार से प्रीती ने छात्रावास को अपनाया और वो सबके साथ पढ़ने तथा प्रेमपूर्वक रहने लगी। उसके रहन सहन में भी परिवर्तन आने लगा। अब प्रीती को हर गतिविधि में भाग लेना अच्छा लगता है। अब यह मेंहदी, सिलाई बहुत अच्छी तरह से सीख चुकी है और इसका रहन–सहन व उसकी भाषा भी पूरी तरह से बदल चुकी है। प्रीती अब घर जाने की ज़िद नहीं करती और छात्रावास में उसकी उपस्थिति हमेशा पूर्ण रहती है।

पहाणे सुनाती प्रीती से जब छात्रावास में उसके पुराने दिनों की बात करो तो वो थोड़ी शर्माकर पर पूरे आम्तविश्वास से कहती है कि, '' वो प्रीती नासमझ थी, पर ये प्रीती अपना भविष्य बना रही है।''

स्कूल चलें अभियान
मध्य प्रदेश

ए ग्रेड में आने वाली बालिका को पढ़ना नही आता था

उज्जैन ज़िलें के ग्राम चांपाखेड़ा में संचालित बालिका छात्रावास की वार्डन बताती हैं कि, ‘‘समर कैंप के माध्यम से गर्मियों में जून के माह में पास–पड़ोस के ग्रामों में शाला से बाहर एवं शाला त्यागी बालिकाओं को शैक्षिक गतिविधियों के लिए प्रेरित करने के लिए गये थे। उस समय झिरमिरा गाँव में एक बालिका को देखा जो गरीब बर्ग की थी। उसके माता–पिता काम की तलाश में इधर–उधर चले जाते थे। बालिका घर पर अकेली रहती थी। हमने उन्हें समझाया कि आप अपनी बालिका को हमारे छात्रावास में भर्ती करा दो। पहले तो उन्होंने कहा हमारे एक छोटा बालक है उसे कौन रखेगा। परंतु हमारे काफी समझाने पर वे मान गए उस समय वह बालिका 8 वर्ष की थी। उन्होंने उसे हमारे साथ छात्रावास भेज दिया।

अब हमारे सामने सबसे बड़ी चुनौती थी कि वह बालिका 8 वर्ष की थीं उसे पढ़ना–लिखना कुछ भी नहीं आता था। उसे हमें पढ़ना–लिखना सिखाना था और जब हमने उसे पढ़ाने की पहल की तो वह बालिका भी अच्छी लगन के साथ पढ़ने लगी उसकी मेहनत और लगन के साथ–साथ उसने अपने लक्ष्य को प्राप्त करने का जज्बा है। वह कक्षा 8वीं में पढ़ रही है वह अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की कोशिश कर रही है एवं हर वर्ष ‘‘ए’’ ग्रेड में आती है।

यही उस बालिका की सफलता की कहानी है कि वह एक गरीब वर्ग की बालिका होते हुए भी आगे पढ़कर एक अच्छी शिक्षिका बनना चाहती है और अपने जैसी बालिकाओं को शिक्षा देना चाहती है। ताकि वह भी आगे जाकर कुछ बन सके। उस बालिका नाम कुमारी रीना है, और वो हमारे छात्रावास की सबसे होनहार बालिकाओं में से एक है।’’

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

भविष्य की आई पी एस कुमारी निकिता शाह

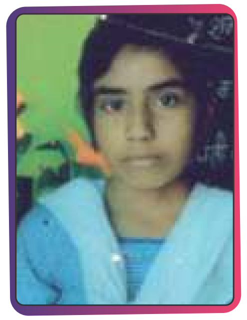

रायसेन ज़िले के सांचेत कस्बे में संचालित बालिका छात्रावास की वार्डन के मुताबिक, बालिका निकिता की दास्तान मात्र कहानी नहीं है बल्कि वास्तविक जीवन की सच्चाई है। निकिता ने कक्षा 5वीं में पढ़ाई करना सपने में भी नहीं सोचा था क्योंकि निकिता, माता–पिता के होते हुए भी अनाथ बालिका है। उसकी माता ने अपनी किसी मजबूरी के तहत दूसरी शादी कर ली तो उसकी माँ भी उसकी नहीं रही। अतः उसके मामाजी ने उसका पालन पोषण किया वह भी बहुत गरीब है। लिहाजा निकिता की पढ़ाई अधूरी रही।

छात्रावास के सर्वे के माध्यम से निकिता के मामाजी से संपर्क हुआ और उसका एडमीशन छात्रावास में करने को वार्डन, सहायक वार्डन ने कहा तो उसके मामाजी एवं नानी ने साफ मना कर दिया। उन्हें समझाया कि हम बहुत अच्छे से बालिकाओं को अपने छात्रावास में रखते है एवं उनके ग्राम के समीप की बालिकाएं हमारे छात्रावास में रहती हैं और अगले दिन हमने समीप के ग्राम के पालकों से निकिता के मामाजी की बात करवाई और उन्हें समझाया कि छात्रावास में रहकर आपकी बालिका पढ़ सकती है एवं अच्छे संस्कार सीखेगी तब कहीं निकिता को बहुत मुश्किल से छात्रावास में प्रवेश कराने के लिए उसके परिवार के लोग तैयार हुए।

हमारे सामने एक बड़ी समस्या थी कि निकिता अपने सौतेले भाई बहनों के साथ उपेक्षा के माहौल में रहकर आई थी। वह बहुत चिड़चिड़ी बालिका थी एवं पढ़ाई में बहुत कमजोर थी साथ ही अन्य बालिकाओं से दूर–दूर रहा करती थी।

समय पर समझाते हुए उसे सबके साथ मिलजुल कर रहना सिखाया एवं जीवन कौशल के सत्रों से निकिता में समझ और सुधार परिलक्षित हुआ। निकिता की रुचि पढ़ने में दिखी तो उसकी इस रुचि का फायदा उठाया। उसे सही मार्गदर्शन दिया पढ़ने में उसके साथ बहुत मेहनत की तो आज वह बालिका जिसे अक्षर ज्ञान नहीं था। वह बहुत अच्छा पढ़ती है।

स्कूल चलें अभियान
मध्य प्रदेश

पढ़ाई में निकिता आज बहुत आगे हैं। उसे हिन्दी, गणित, अंग्रेजी बहुत अच्छा पढ़ती है एवं सामान्य ज्ञान की जानकारी रखती है। निकिता को अन्य बालिकाओं की तरह न्यूज पेपर पढ़ने एवं टी.वी. पर न्यूज सुनने के लिए प्रेरित किया गया, जिससे उसे देश–विदेश की सामान्य जानकारियां हैं। निकिता आज मांडना, टेडीवियर, मेंहदी, रंगोली एवं कई प्रकार की सजावट की चीजें बनाती है। निकिता को सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेना भी अच्छा लगने लगा है। वह आज ढोलक, मजीरा बहुत अच्छा बजाती है एवं गाने बजाने में भी रुचि रखती है।

आज निकिता व्यवहार कुशल बालिकाओं में सबसे आगे हैं। वह अपने छात्रावास के कर्मचारियों, साथ की बालिकाओं और सभी से बहुत अघ्च्छा व्यवहार रखती है।

अपने छात्रावास के कार्य निकिता स्वयं करती है एवं अपनी साथी बालिकाओं से करवाती है। जैसे बागवानी, पौधे लगवाने, अपने कक्ष को कैसे साफ रखना आदि। काम करते और सहयोगियों से करवाते हुए निकिता को देखें तो उसका नेतृत्वगुण अलग ही दिखता है। निकिता का सपना पढ़ लिखकर आई.पी.एस. ऑफीसर बनना है।

हाथ नहीं है पर पैर से लिखती हूँ

- पुनी चम्पालाल

मैं पुनी पिता चम्पालाल बहुत छोटे से गांव बगोदा की रहने वाली हूँ। मैं 7 या 8 माह की थी माँ खाना बनाने के बाद चूल्हे की आग बुझाना भूल गई और मैं घुटने चलते–चलते चूल्हे में चली गई और चूल्हे में गिर गई जिससे मेरे दोनों हाथ व मुंह जल गये। जब मैं 5 वर्ष की थी तब मेरे पिताजी ने मुझे स्कूल में कक्षा 1 ली में प्रवेश दिला दिया। वहां मैं 5 वर्ष तक पढ़ी और जब मैं समझने लगी तो मुझे लगने लगा कि स्कूल के बच्चे मेरे कुरूप होने के कारण मुझसे डरते हैं और मुझसे दोस्ती नहीं करते और साथ में नहीं खिलाते हैं। इसलिए मैंने स्कूल जाना बंद कर दिया तब पिताजी ने मुझे समझाने का प्रयास किया तो मैं रोने लगी कहा कि लड़कियां मुझे चिढ़ाती है और मुझे पत्थर मारती है मेरे पिताजी कुछ भी नहीं कर पाए और मेरी पढ़ाई छूट गई।

वर्ष 2012–13 में इंदौर ज़िले में ही हमारे पास के गांव सिमरोल में, विशेष आवासीय प्रशिक्षण केन्द्र आया तब मेरे गांव के शिक्षकों ने मेरे माता–पिता को इसकी जानकारी दी और वहां दी जाने वाली सुविधाओं के बारे में बताया। शिक्षकों ने मुझे समझाकर आवासीय प्रशिक्षण केन्द्र तक लाए तब मैं रो रही थी मैं वहां रहना नहीं चाहती थी। तब शिक्षिकाओं ने बड़े प्यार से मुझे समझाया और वहां सभी बालिकाओं से मिलवाया तो मुझे समझाया तो मुझे अच्छा लगा और मैं वहां रहने को तैयार हो गई मैं 9 माह प्रशिक्षण केन्द्र में रही। इसके बाद मुझे बालिका छात्रावास सिमरोल में प्रवेश मिल गया। यहां मुझे सारी सहेलियां मिल गई और पढ़ाई के साथ खेल जीवन कौशल व्यवसायिक कौशल की भी शिक्षा मिल रही है। अब में खेलने में रुचि लेती हूँ। हाथ नहीं है पर पैर से लिखती हूँ। अब मेरे पास डर और संकोच नहीं है और में सभी के साथ मिल–जुलकर रहती हूँ मेरे माता–पिता यह सब देखकर बहुत खुश हैं।

माँ का बिछोह प्रियंका को ले आया छात्रावास

बालिका छात्रावास तिल्लौर खुर्द की बालिका कुमारी प्रियंका पिता फूलसिंह पंवार, आदिवासी बारेला उपजाति की होने के कारण कई विपरीत सामाजिक परिस्थितियों में भी अपना भविष्य संवारने का सपना लिए हुए अध्ययन करने के लिए छात्रावास आई। प्रियंका ने बालिका छात्रावास तिल्लौर खुर्द में दिनांक 27 जुलाई 2011 को कक्षा 6 में प्रवेश लिया।

प्रियंका चार वर्ष की थी, तभी उसकी माता का देहांत हो गया। उसके परिवार में छः भाई और वह एक ही बहन है, सभी भाई उससे बड़े हैं। पिता खेत में मजदूरी कर अपने परिवार का भरण–पोषण करते हैं घर में आर्थिक समस्याएं भी थी। माँ स्व.लक्ष्मीबाई की मृत्यु ने उसके बचपन को माँ के प्यार से वंचित रखा। परिवार में एक मात्र महिला उसकी माँ थी उनका भी चला जाना प्रियंका के लिए सबसे बड़े दुख का कारण था। परिवार में सभी पुरुष होना और उनका ज्यादा समय घर के बाहर मजदूरी पर जाने से वह अपने को अकेला महसूस कर रही थी। पारिवारिक माहौल से बालिका छात्रावास तिल्लौर खुर्द में रहने से उसे अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित करने का अवसर मिला। छात्रावास में प्रियंका को वार्डन, सहायक वार्डन से माँ सा प्यार मिला और छात्रावास की बालिकाओं ने बहनों के प्यार की कमी को पूरा किया।

छात्रावास में रहने से उसके आत्मविश्वास में वृद्धि हुई और साथ ही उसने हर परिस्थिति में अपने को संतुलित रखते हुए सही निर्णय लेने की क्षमता को बढ़ाया। आज छात्रावास में प्रातःकाल से योग, स्वच्छता, पढ़ने में पूजा–पाठ, प्रार्थना, आदि भावनात्मक कार्यों में प्रियंका की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। प्रियंका की रुचि केवल पढ़ाई तक ही सीमित नहीं है, बल्कि वह हर क्षेत्र में जैसे–सिलाई, कढ़ाई, चित्रकला, रंगोली, हस्तकला, अनुपयोगी वस्तुओं से उपयोगी वस्तुओं की बनाने की कला में निपुण हो चुकी। गीत गाना, नृत्य करना उसे अच्छा लगता है। पुस्तकालय में किताबों को पढ़ने में उसकी रुचि दूसरी बालिकाओं से अधिक है। दैनिक अखबार पढ़कर वह अपना सामान्य ज्ञान बढ़ाती है। आज प्रियंका कम्प्यूटर चलाने में भी सक्षम है।

जिन्दगी में वह बहुत कुछ करना चाहती है इस वर्ष वह कक्षा 8वीं की छात्रा होने से छात्रावास में उसका अंतिम वर्ष है। वह छात्रावास में अन्य बालिकाओं के लिए प्रेरणा स्त्रोत है। आज वह जिंदगी जीवन में कठिन परिस्थितियों में कैसे सामना करना है जान गई हैं परिवार की आर्थिक स्थिति को देखते हुए उसने निर्णय लिया है कि वह सक्षम बनाकर उनका सहयोग करना चाहती है। वह आगे जाकर डॉक्टर बन गाँव में रहकर समाज सेवा करना चाहती है। प्रत्येक व्यक्ति के लिए उसके दिल में सहयोग की भावना व मित्रता के भाव है। वह एक अच्छी वक्ता के साथ–साथ वह अच्छा लिखती भी है। अपने विचारों को किस तरह व्यक्त किया जाता है जान गई है। उसमें नेतृत्व करने की क्षमता है, एक अच्छी सोच के साथ ही वह समाज में फैली बुरी मान्यताओं का विरोध करती है। अपने छात्रावास की बालिकाओं को प्रोत्साहित करते हुए प्रियंका ये पंक्तियां अक्सर सुनाती है कि–

कर्मवीर के पथ का हर पत्थर साधन बनता है।
दीवारें भी दिशा बताती है जब मानव आगे बढ़ता है।

विभिन्न गतिविधियों की झलकियां

विभिन्न गतिविधियों की झलकियां

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

विभिन्न गतिविधियों की झलकियां

स्कूल चलें अभियान
मध्य प्रदेश